the Government is very 'non-serious' about national security.

12.19 hrs.

(At the stage, Shri Chandrajit Yadav left the House.)

MR. SPEAKER : Yes, Mr. Parmar.

(Interruptions)

12.20 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Reported malpractices and alleged ill-treatment by doctors towards patients in various hospitals particularly in Dr. Ram Manohar Lohia Hospital, New Delhi.

श्री हीरालाल आर. परमार (पाटन) : अध्यक्ष महोदय, आपकी अनुमति से मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री का ध्यान आकृष्ट करता हूं और उनसे प्रार्थना करता हूं कि वह इसके बारे में एक वक्तव्य दें :

"विभिन्न अस्पतालों, विशेषकर डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली, में डाक्टरों के कदाचारों के समाचार तथा रोगियों के साथ उनके कथित दुर्व्यवहार और इसके सम्बन्ध में सरकार द्वारा की गई कार्यवाही।"

MR. SPEAKER : Yes. Mr. Health Minister.

SHRI RAJESH PILOT (Bharatpur) : On such occasions this assurance must come from the Government that the Government is seized of the matter and they are fully aware of it.

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS, SPORTS AND WORKS AND HOUSING (SHRI BUTA SINGH) : I have already said that we are very much seized of the situation. The Hon. Defence Minister has written to the Hon. Speaker. We are very serious about it. We are not interested in publicity. We believe in action.

*(Interruptions)***

MR. SPEAKER : Nothing will go on record.

ये आदमी बाहर जाकर बतायेंगे कि ये भले आदमी वहां पर ऐसा काम करते हैं।

12.22 hrs.

(MR. DEPUTY SPEAKER *in the Chair.*)

THE MINISTER OF HEALTH (SHRI B. SHANKARANAND) : Mr. Speaker, Sir, Medical care facilities in Delhi have not been able to keep pace with the increase in its population. During the last decade the population of Delhi has increased from 40 lakhs to 62 lakhs, whereas the bed strength of all the hospitals has increased from 10300 to 13300. As a result, these hospitals are under tremendous pressures all the time, and, are often not in a position to offer the optimal medical care. This situation is further worsened by the ever-increasing flow of floating population in Delhi. The average number of OPD patients per day is 4083 in Safdarjang Hospital, 3836 in Dr. R. M. L. Hospital, Hospital, 3478 in All India Institute of Medical Sciences, 1029 in Smt. S K. Hospital and 956 in Kalavati Saran Children's Hospital. As the hospitals are so crowded, there might be instances of frayed tempers or ruffled feelings between the patients and the people accompanying them and the doctors and the employees of the hospital either on account of inadequacies of attendance or shortage of medicine.

**Not recorded.

This, at times, has given rise to complaints not only by the patients and the public but also by the hospital staff. The authorities of Government hospitals look into these complaints and take necessary actions. There is also a Cell in the Directorate General of Health Services to deal with the complaints.

The Hospital Control Board under the chairmanship of the Union Health secretary and the Delhi Hospital Board under the chairmanship of the Lt. Governor of Delhi look into the functioning of the hospitals in Delhi. The hospitals have been given specific directives to prepare perspective plans with a view to ensure the optimal delivery of services to meet the growing needs and requirements of the people. In order to augment the existing medical care facilities and reduce the pressure on patient care in the hospitals, action is under way to establish two 500 bedded hospitals each at Shahdara and Hari Nagar and three 100 bedded hospitals each at Mangolpuri, Khichripur and Zaffarpur on the periphery of Delhi.

The Government is conscious of the fact that there is scope for improvment in the services in the hospitals in Delhi. The House may kindly appreciate the constraints under which these hospitals are struggling hard to deliver services for efficient patient care. It has always been our endeavour to ensure that best possible services to the people are rendered by the hospitals.

श्री हीरालाल आर. परमार : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी ने जवाब तो बहुत लम्बा दिया और समस्या को कबूल भी कर लिया। उनके आश्वासन को देखते हुए मुझे देहात की एक बात याद आ गई -- एक व्यापारी को किसी आदमी से 40 रु. लेना था। व्यापारी बार-बार उस व्यक्ति के पास जाता था। एक दिन उस व्यक्ति ने व्यापारी से कहा रसीद दो और पैसा ले लो। व्यापारी ने कहा पैसा तो दो मैं रसीद देता हूं। व्यक्ति ने कहा—नोट कर लो, दस देंगे, दस दिलायेंगे, दस का वायदा और दस का क्या लेना-देना। मंत्री जी ने कहा है कि 500-500 और 100-100 पलंगों वाला अस्पताल खोलने की कार्यवाही की जा रही है। तो क्या यह बढ़ती हुई आबादी को देखते हुए, समस्या हल हो जाएगी ?

मैं मंत्री महोदय का ध्यान डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल की ओर ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूं। धनी और वी. आई. पी. लोग तो प्राइवेट अस्पतालों में चले जाते हैं या डाक्टर को घर भी बुला लेते हैं। गरीबों के लिए जो अस्पताल आपने बनाए हैं, मैं उनकी हालत की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूं। वहां गरीब लोगों को जो सामग्री दी जाती है, जैसे अंडे, दूध, फल वगैरह, वे वहां कर्मचारी लोग आपस में बांट लेते हैं। मैं कहना चाहता हूं कि पूरी सुविधा वहां के गरीबों को नहीं मिल पाती है। वहां के मरीजों को पेशाब व दैनिक कार्य के लिए जो बर्तन दिए जाते हैं, वे टूटे-फूटे होते हैं और अस्पताल में बहुत गन्दगी रहती है। जब हमारे देश की राजधानी के अस्पताल में यह हालत है तो डिस्ट्रिक्ट और छोटे-छोटे गांवों के अस्पताल की क्या हालत होगी, यह अन्दाजा आप स्वयं लगा सकते हैं। इसलिए मेरा आपसे निवेदन है कि हम गरीबों को न्याय देने की बात कर रहे हैं, लेकिन हम उनको न्याय दिला नहीं सकते हैं, उनके साथ अन्याय हो रहा है, इस ओर आपको ध्यान देना चाहिए।

एक उदाहरण मैं आपको और देना चाहता हूं। हमारे गुजरात में ओ. एन. जी. सी. का प्रोजेक्ट चल रहा है, जो कि मेरे क्षेत्र में है। उस जगह पर ओ. एन. जी. सी. का अस्पताल है, लेकिन इस अस्पताल के लिए जितनी दवाइयां खरीदी जाती हैं, वे बाद में सब मैडिकल स्टोर पर चली जाती हैं। मैडिकल सर्टिफिकेट देने

के नाम पर सैकड़ों-हजारों रुपयों की दवाइयां किताबों में लिखने के बाद मैडिकल स्टोर पर चली जाती हैं। मैं माननीय मंत्री जी से कहना चाहता हूं कि यह गम्भीर समस्या है, इससे निपटने के लिए आपको गम्भीर रूप से ठोस कदम उठाना चाहिए ?

SHRI B. SHANKARANAND : Mr. Deputy Speaker, Sir, on many occasions I have told in this House about the progress of construction of these hospitals. The various stages of construction of the two 500 bedded hospitals each at Shahdara and Hari Nagar and three 100 bedded hospitals each I have stated in this House; so I need not go into details because the Hon. Member only wanted to know the stage of construction of these hospitals. It is not a mere promise but the construction of the big hospitals is nearing completion and in respect of the other hospitals also action is under way.

So, far as the allegations made against the employees and the staff of the hospitals regarding the misappropriation of foodstuffs, medicines and other materials is concerned, the Hon. Member has made some vague allegations. It is very difficult to accept these allegations unless he brings to my notice specific or concrete cases which we can look into and take necessary action. I want to inform the House that complaint books are placed in each hospital. The complaints are recorded therein and the members of the public and also the Hon. Members do write to the Ministry and also to the Director General of Health Services direct about the various complaints.

As far as my information goes, there has not been any complaint regarding misappropriation of diet meant for the patients. Regarding utensils etc. there is a system of regular replenishment from the Maintenance Grants of the hospital.

श्री राम लाल राही (मिसरिख) : उपाध्यक्ष महोदय, माननीय मंत्री जी का जो लिखित बयान मुझे देखने को मिला, उसको पढ़कर मुझे इस बात की प्रसन्नता हुई है कि माननीय मंत्री जी ने अस्पतालों में जो परिस्थितियां हैं, मरीजों के साथ जैसा दुर्व्यवहार हो रहा है, जो वहां पर अभाव है—उसको इन्होंने स्वीकार किया है। माननीय मंत्री जी ने अपने जवाब में कहा है कि दिल्ली की आबादी बढ़ रही है और इस बढ़ती हुई आबादी को दृष्टि में रखकर हम अभी उतनी मात्रा में चिकित्सा सेवा उपलब्ध नहीं करा पा रहे हैं, हालांकि इन्होंने उसको बढ़ाने की बात कही है। मैं जानना चाहता हूं -इसका जिम्मेदार कौन है ? आज गांवों की तरफ से लोग शहरों की तरफ भाग रहे हैं, शहर बढ़ रहे हैं, इन शहरों के बढ़ने के लिये कौन जिम्मेदार है ? इसका क्या कारण है ? क्या यह सही नहीं है कि गांवों के रहने वाले अपने को असुरक्षित अनुभव करते हैं ? क्या यह सही नहीं है कि बीमारी होने पर गांवों के लोगों को कोई देखने वाला नहीं और दवायें नहीं मिलती हैं ? आपकी सैकड़ों पी० एच० सी० में डाक्टर नहीं हैं, नर्सें नहीं हैं, दवायें नहीं हैं। जहां तक मुझे मालूम है—आपके एक पी० एच० सी० में तनख्वाहों पर कम-से-कम 10 हजार रुपये माहवार खर्च होते होंगे, जिनमें डाक्टर, नर्स, वार्ड-ब्वाय, हैल्थ विजिटर आदि की तनख्वाहें शामिल हैं.....

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री (सैदपुर) : ज्यादा खर्च होता है।

श्री रामलाल राही : लेकिन दवाओं पर साल-भर में डेढ़ हजार रुपया खर्च होता है। जब गांव का आदमी यह देखता है कि डेढ़ हजार रुपया दवाओं पर, 60-70 हजार की आबादी पर साल भर में खर्च होता है और शहरों में इसके मुकाबले ज्यादा सुविधायें हैं, तो क्या वह शहरों की तरफ नहीं भागेगा ?

क्या आपने इस पर विचार किया है और यदि विचार किया है तो आप बतलाइये कि इसके लिये कौन जिम्मेदार है ? आप जिम्मेदार हैं या नहीं हैं ?

आपने कहा है कि शहरों के अस्पतालों में बाह्य मरीजों की संख्या बढ़ रही है और अन्तरंग मरीज जिनको वार्ड में जगह देते हैं, चारपाई और बिस्तर देते हैं, उनकी संख्या भी बढ़ी है। क्या कभी आपने इस बात का पता लगाने की कोशिश की है कि जितना बजट हिन्दुस्तान का दवाओं पर देश की जनता के लिये निर्धारित करते हैं, उस बजट में से मिनिस्टर, एम.एल.ए., एम. पी., आई. ए. एस., पी. सी. एस., आई. पी. एस., अफसरों तथा अन्य विशिष्ट लोगों के लिये दवाओं के लिये निर्धारित धन-राशि का तीन-चौथाई खर्च हो जाता है और बाकी का एक-चौथाई 70 करोड़ जनता के लिये खर्च होता है ? मैं अपने कथन में सही हूं, लेकिन यदि यह बात गलत लगती है तो क्या इस बात की जांच करायेंगे और जांच रिपोर्ट सदन को विश्वास में लेने के लिए सदन-पटल पर रखने की कृपा करेंगे ?

मंत्री जी ने कहा है कि जो कदाचार या भ्रष्टाचार अस्पतालों में होता है, उसकी जांच के लिए हमारे पास कई मीडिया हैं। उन्होंने कहा है कि केन्द्रीय स्वास्थ्य सचिव की अध्यक्षता में अस्पताल नियंत्रण बोर्ड और दिल्ली में उप-राज्यपाल की अध्यक्षता में दिल्ली अस्पताल बोर्ड है और ये समय-समय पर जांच करते हैं। मेरा आरोप यह है कि ये जांच नहीं करते हैं। यह बोर्ड आपने बनाया जरूर है लेकिन ये वी.आई.पी. की हैसियत से अस्पताल में जाते हैं और अस्पताल का जो विशिष्ठ व्यक्ति होता है, सुपरिन्टेन्डेंट जिसे कहते हैं, वह इनको माला पहनाकर गेट पर अच्छी खातिरदारी करके वहीं से उनको लौटा देता है और कोई जांच नहीं करते हैं। अगर वह जांच करते हैं, तो मैं आपसे पूछना चाहता हूं कि अस्पतालवार इनका ब्यौरा क्या है ? एक साल का, एक महीने का या बीच में छोड़-छोड़कर तीन महीने का आप वह ब्यौरा इस सदन को विश्वास में लेने के लिए यहां पेश कर सकते हैं। आपका यह कथन क्या सही है कि वे जांच करने के लिए जाते हैं। अगर जाते हैं तो यह बताइये कि वे जांच करने के लिए कहां-कहां गये और क्या उन्होंने कोई जांच रिपोर्ट दी है और अगर दी है, तो उस पर आपने क्या कार्यवाही की है। क्या इसका ब्यौरा आप सदन को विश्वास में लेने के लिए देंगे और उसकी रिपोर्ट यहां पेश करेंगे और आश्वासन देंगे कि आपने जो यह लिखा है, यह 100 फीसदी सही है और उसका प्रमाण यह है ?

मंत्री जी को मालूम नहीं है। मंत्री जी दिल्ली में रहते हैं और दिल्ली राजधानी को लोग इन्डिया कहते हैं इसके दो रूप के अनुसार दो नाम हैं, जो लोग गांव में रहते हैं वह हिन्दुस्तानी हैं और जो दिल्ली में हैं, उनको इन्डिया वाले कहते हैं, हालांकि हम भी और आप भी गांव से आए हैं, लेकिन यहां दिल्ली में आकर चकाचौंध में पड़ गये। आज गांवों की हालत बड़ी बदतर है और इतनी बदतर है जैसे कि मैंने पहले बताया कि वहां पर 1500 रुपये की कुल दवाई जाती है और 10 हजार रुपये तनख्वाह में देते हैं। डाक्टरों को भी शहरों की चकाचौंध में कुछ दिखाई ही नहीं देता है। राम मनोहर लोहिया सहित दिल्ली के अस्पतालों का बुरा हाल है। मेरा आरोप है कि डा० डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में जब ** सुपरिन्टेन्डेंट थे, तब से वहां करप्शन शुरू हुआ था और उस करप्शन का सिलसिला आज तक**

**Not recorded.

के समय में भी निरन्तर जारी है। लाखों रुपयों की दवाइयां विदेशों से मंगाई हैं।

MR. DEPUTY SPEAKER : Don't mention the names of the persons. You could have mentioned it, if you had given in writing.

श्री रामलाल राही : मैं सुपरिन्टेन्डेंट से कहे देता हूं। जो आज वहां पर सुपरिन्टेन्डेंट है, उसने लाखों रुपये की कीमत की दवाइयां विदेशों से मंगाई हैं और आपको यह सुनकर ताज्जुब होगा कि 12 हजार रुपये का मात्र टूथ पेस्ट मंगाया गया है जबकि लोगों को एनलजिन, नोवलजिन और चोट-चपेट लगने पर जो दवाई की टिकियां दी जाती हैं, वे यहां से लेकर गांवों के अस्पतालों में भी नहीं मिलती हैं। यहाँ पर तो इतनी भीड़ होती है लेकिन मरीजों को दवाई नहीं मिलती। जब कोई गरीब व्यक्ति वहां पर जाता है, तो उसका पर्चा बना दिया जाता है, थोड़ा-सा पेट पर हाथ डाक्टर मार कर देखते हैं और मरीज से कह देते हैं कि दवाई बाहर से खरीद लो। तो आज यह स्थिति अस्पतालों में हो गई है।

मेरे पास यह जनसत्ता अखबार है, जो कि बहुत लोकप्रिय अखबार हो रहा है और मैं इसकी तारीफ करना चाहूंगा क्योंकि इसकी न्यूज और इसके व्यूज सत्यता पर आधारित हैं। इसमें एक खबर छपी है, "प्राइवेट प्रैक्टिस, मरीज बेहाल" यह सासाराम की घटना है। इसमें लिखा है कि सासाराम अस्पताल में जो डाक्टर हैं, अस्पताल की चारदीवारी के आसपास वे अपनी निजी दुकानें चलाते हैं। अपने दलाल लगाए हुए हैं। अस्पताल में डाक्टर लोग नहीं बैठते, उनके दलाल मरीजों को पकड़कर अस्पताल से लाते हैं और बाहर उनकी दुकानों में दिखाते हैं। दवाई अस्पताल से जाती है। पैसा उनकी जेब में जाता है। यह हालत है। यह आपका इंतजाम है। यही हाल आपके यहां दिल्ली में है। जिन सुपरिन्टेंडेंट का मैंने नाम लिया वे इस देश के वरिष्ठतम व्यक्ति के निजी डाक्टर हैं। उनका बोलबाला है। उनका रुतबा है। अपने रुतबे के कारण ही वे सुपरिटेंडेंट बन पाए हैं। लोहिया अस्पताल का माहोल आज भयावह-सा लग रहा है। उनके नीचे के डाक्टर डरे दबे हुए हैं। वे जानते हैं कि ये सुपरिन्टेंडेंट जो बैठा है, केवल इसको खुश रखो, मरीज को खुश करने की जरूरत नहीं है। इसलिए जितने लोग वहां के हैं, सुपरिन्टेंडेंट के इर्द-गिद घूमते हैं। मरीज की परवाह वे नहीं करते।

उपाध्यक्ष महोदय, आज आप यहां बैठे हैं। दो घन्टे के लिए आप चले जाइए किसी अस्पताल के जनरल वार्ड के अन्दर। आप देखेंगे कि पाखाना टूटा हुआ नजर आएगा। गंदगी का वहां राज्य होगा। बिस्तर और पलंग मैले होंगे। चादर और गद्दा फटा हुआ और गंदा होगा। सरकार इसके लिए बजट देती है, लेकिन जाली रसीदें बनाकर खर्चा दिखा दिया जाता है और वही पुराना सामान निरन्तर इस्तेमाल होता रहता है। क्या आप इसकी छानबीन करने का कोई उपाय करेंगे।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं सीतापुर से आता हूं। सीतापुर जनपद उत्तर प्रदेश में है। सीतापुर में एक गोदाम है दवाओं का। लाखों रुपये की दवाएं बिल्डिंग सहित जल गईं। एक करोड़ रुपए का नुकसान हुआ होगा। सीतापुर में यह हुआ है।

MR. DEPUTY SPEAKER : I know that place, Sitapur. I am Lakshmanan !

SHRI RANA VIR SINGH (Kaiserganj): Sir, he is Ram !

श्री रामलाल राही : सीतापुर बहुत मशहूर जगह है। वहां पर एशिया का मशहूर आंखों

का अस्पताल है । उपाध्यक्ष महोदय, कहा यह जाता है कि आग कैसे लगी, क्यों लगी, आग लगने का कारण क्या है। मैं मंत्री जी से चाहूगा कि क्या वे इस बात की जांच कराएंगे ।

कहा जाता है कि सुपरिंटेंडेंट ने कुछ जाली वाउचर बनवाए थे मार्च के महीने में और वे चाहते थे कि स्टोर इंचार्ज उन वाउचरों को शामिल कर ले अपने स्टोर में ताकि वे जस्टीफाई हो जाएं और पैसा वे हजम कर जाएं । स्टोर इंचार्ज कोई गरीब हरिजन लड़का था । वह तैयार नहीं हुआ । उसने कहा कि मैं गरीब आदमी हूं । मुझे इस पाप में मत सानिए, तो आग रात के 12 बजे लगी । बताया यह जाता है कि बिजली से आग लग गई और यह जल गया । मेरा आरोप है कि यह जानबूझकर घटना कराई गई है और जो जाली पर्चे बनवाए गए थे वे सुपरिन्टेंडेंट के दफ्तर में आज भी मौजूद हैं, उनको जस्टीफाई कराने की वे कोशिश कर रहे हैं । श्रीमन् ये आपके देश के अस्पतालों की हालत है । मरीज के साथ कैसा व्यवहार हो रहा है । चाहे मैडिकल इंस्टीट्यूट में चले जाइए, सफदरजंग अस्पताल में चले जाइए, डा. लोहिया अस्पताल में चले जाइए, सब जगह एक ही स्थिति है । यह सब क्यों है । जैसा कि मैंने कहा कि एक के इर्द-गिर्द जब सब चलने लगते हैं तो लोकतंत्र की परंपराएं टूटने लगती हैं । अगर मंत्री जी के इर्द-गिर्द लोग घूमने लगेंगे तो वे कानून पर नहीं चलेंगे । कानून पर नहीं चलेंगे तो लोगों को न्याय नहीं मिलेगा । आज इसलिए लोगों को न्याय नहीं मिल रहा है ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं जानता हूं कि दवाओं का अभाव है । अस्पतालों में मरीजों की तादाद बढ़ रही है । लेकिन मैं एक बात पूछना चाहता हूं कि क्या यह बात सही नहीं है कि आपके यहां हजारों डाक्टर बेकार घूम रहे हैं और पी.एच.सी. गांव में खाली पड़ी हैं । ट्रेंड नर्सेस आपके यहां घूम रही हैं बेकार और गांव में पी.एच.सी. खाली पड़ी हैं । आपके पास डाक्टर हैं, नर्सेस हैं तो क्या आप अगर दवाई नहीं दे सकते हैं तो क्या आप लोगों को सलाह देने के लिए डाक्टर और नर्स भी नियुक्त नहीं कर सकते । यह कितने शर्म की बात है कि अस्पताल आपने खोल दिया लेकिन डाक्टर आपके पास नहीं हैं । बड़े खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि हमारे देश में व्यक्ति की जिन्दगी के साथ खिलवाड़ हो रहा है । इसलिए स्वास्थ्य विभाग को आप ठीक से देखें जिससे व्यक्ति की जिंदगी से खिलवाड़ न हो । मुझे मालूम है, महावीर दास जी, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व राज्य सभा के सदस्य भी रहे हैं, दवाओं के अभाव व लापरवाही के कारण उनकी मृत्यु हुई थी । वह तो एक्स एम. पी. थे, लेकिन न मालूम रोज कितने गरीब आदमी मरते होंगे । गरीब आदमी को चोट लग जाए और एक बोतल खून की जरूरत हो तो वह नहीं मिलेगी । मिनिस्टर, आई. ए. एस., आई. पी. एस. इंजीनियर आदि जो अपनी जेब से पैसे लगाकर अच्छी से अच्छी दवाई और बढ़िया से बढ़िया खून प्राप्त कर सकते हैं, उनको तो आप दे देते हैं लेकिन गरीब आदमी को नहीं । इस नीति में परिवर्तन करने की आवश्यकता है । आप लोग बहुत समाजवाद की बात करते हैं । मैं पूछना चाहता हूं कि क्या आप इस नीति में परिवर्तन करने की बात सोच रहे हैं या नहीं ? कि दवाएं, उन लोगों को मिलनी चाहिए जो खरीद नहीं सकते, जो गरीबी के शिकार हैं और अस्पताल के दरवाजे से दुत्कार दिए जाते हैं । ऐसे लोगों के लिए क्या कोई नीति बनाना चाहते हैं या नहीं ?

MR. DEPUTY SPEAKER : Now, you have to conclude. You wanted only 10 minutes. That was a gentleman's agree-

ment and I have allowed. Now, you have taken 17 minutes.

SHRI RATANSINH RAJDA (Bombay South) : Sir, today all his arguments are very well founded.

MR. DEPUTY SPEAKER : Every day, they are very valid. What is the reply he is going to get from the Minister, I do not know. He has not put questions to the Minister.

श्री रामलाल राही : मैं, सही तो नहीं कह सकता, लेकिन अपनी जानकारी के आधार पर कह रहा हूं। आपका जो विलिग्डन अस्पताल यानी जिसको डा० लोहिया अस्पताल कहते हैं, वहां तीन करोड़ का बजट है। सन् 1980 में जो वहां सुपरिन्टेंडेंट थे यानी इनसे पहले जो आज हैं, उन्हीं के जमाने से घोटाला प्रारम्भ हुआ था..... (**व्यवधान**)

यह बात मैं पहले बतला चुका हूं। जब इस घोटाले का भण्डाफोड़ हुआ तो उनके साथ दो और अधिकारियों को मुअत्तिल किया गया। आज के सुपरिन्टेंडेंट साहब भी उस घोटाले में शामिल थे। कुछ सामान और दवाओं की खरीद के बारे में यह घोटाला था। एक आज का सुपरिन्टेंडेंट बच गया बाकी सजा पा गए। क्या इसलिए कि वह देश के किसी विशिष्ट व्यक्ति का निजी डाक्टर है या इसलिए कि विशिष्ट व्यक्ति से संरक्षण मिल रहा है। अगर नहीं मिल रहा है तो उसको भी मुअत्तिल होना चाहिए था। वह मुअत्तिल नहीं होता है तो बाकी डाक्टर भी मन बनायेंगे कि चाहे जितना ही अपराध करो और किसी बड़े की शरण में चले जाओ। उन्हें पता है कि वे बच जायेंगे। इसलिए अब डाक्टर हम जैसे लोगों का इलाज नहीं करते, हमें दवाई नहीं देते। अब तो वे बड़े नेताओं के दरवाजे झांकते घूमते हैं और इस तलाश में रहते हैं कि किस बड़े नेता की शरण में रहें, किसकी छत्रछाया में रहें ताकि मौज-मस्ती करें। इसलिए मैंने ये जो कुछ सवाल उठाये हैं, मैं चाहता हूं कि मंत्री जी गम्भीरता से उनका उत्तर देंगे, हंसी मजाक में नहीं।

SHRI B. SHANKARANAND : Mr. Deputy Speaker, Sir, the Hon. Member has travelled over the land which is not necessarily relevant to the Calling Attention Notice. So, I need not reply to that aspect and portion of his observations because he has referred to Sitapur, Sasaram and what not, and other primary health centres.

श्री रामलाल राही : सर, आन ए प्वाइंट आफ आर्डर। जैसा मंत्री जी ने कहा, हमारे ध्यानाकर्षण प्रस्ताव में स्पष्ट लिखा हुआ है— विभिन्न अस्पतालों, विशेषकर डा० राममनोहर लोहिया अस्पताल-- इसलिए प्रस्ताव में विभिन्न अस्पतालों का शब्द है, इसके माने केवल डा० राममनोहर लोहिया अस्पताल नहीं है। फिर आप तो स्वास्थ्य मंत्री हैं, हम जैसे छोटे आदमियों की बात अलग है, आप ऐसा कहें तो लोग हंसेंगे।

SHRI RATANSINH RAJDA : Sir, if you see the wording of the Calling Attention Notice, it says, "various Hospitals particularly Dr. Ram Manohar Lohia Hospital."

MR. DEPUTY SPEAKER : He never said that he should not say all that. He can start from anywhere, even from Kanyakumari. He never said that he should not mention all that.

SHRI B. SHANKARANAND : Sir, you have allowed the Hon. Member to speak and he has spoken. I only said that I will reply to the relevant aspect of the Calling Attention Notice.

First of all, I can say that he has made certain wild allegations which are not based on facts, particularly, in regard to certain individuals I can only say that the Hon. Member should have ascertained

the facts before making these wild allegations against certain persons. Indirectly, he has hinted against certain doctors. I can only say that these allegations are baseless based on facts.

About the action taken against certain doctors in Dr. Ram Manohar Lohia Hospital, the matter is entirely different. It does not form part of the subject matter of the Calling Attention Notice. So, I need not go into that aspect. We have initiated action against the defaulting doctors. The inquiry is going on. Whoever is found guilty will be punished. I can assure the House that we will not be lenient against those who really have committed some corruption or otherwise. We will take action. But before the inquiry is over, perhaps it will not be wise on our part to make allegations against those doctors who are not at all concerned with such aspects.

Then, he made certain allegations about the paucity of doctors and other services in primary health centres. There are about 6000 primary health centres in the country. As per the information available with us, there are only 36 primary health centres out of 1000 primary health centres where there is paucity of doctors and other services. The Hon. Member's allegation that we are only giving medicines worth Rs. 1000 and odd to primary health centres...

श्री रामलाल राही : मेरे जिले सीतापुर में ही केवल 15 चिकित्सालय ऐसे हैं, जहां डाक्टर बिल्कुल नहीं जाते । क्या व्यवस्था कराने को तैयार हैं ?

SHRI B. SHANKARANAND : Maybe, it is one of those 36 primary health centres. The primary health centre is provided with medicines worth Rs. 12,000.

The Hon. Members might be residing in such areas where there are no doctors in the Primary Health Centres and there are 36 such Centres in the country and it is possible that they may belong to such Centres.

The Hon. Member has made such wild allegations that certain hospitals have purchased tooth-paste. No hospital buys tooth-paste. If the Hon. Member has got any information, let him furnish the facts and we will take action against that.

The hospitals are replenished with new furniture and hospital beds, whenever required, as soon as the old ones go out of use.

I thought that the Hon. Member would give us some information about the misbehaviour and misappropriation of medicines which is relevant to the call attention motion But the Hon. Member did not furnish any such material in his long speech.

I again assure the House that if any case of corruption and misbehaviour comes to me, I will definitely take action.

(*Interruptions*)

MR. DEPUTY SPEAKER : Do not record that. Not allowed.

श्री जयपाल सिंह कश्यप (अंबला) : उपध्यक्ष महोदय, मुझे मंत्री जी के साथ रहने का बहुत ही सौभाग्य प्राप्त है । कई पागलखानों में हम लोग साथ-साथ गये हैं । एक पागलखाने में जब प्रवेश किया, चादरें, गद्दे नए थे, खाना भी बढ़िया था, दवायें भी थीं और देखभाल भी अच्छी थी । वहां एक पागल ने मंत्री जी से हाथ जोड़कर अनुरोध किया था कि मंत्री जी आप परमानेन्टली यहां रुक जाइये उससे कम से कम हमारी देखभाल अच्छी होती रहेगी ।

मंत्री जी आपने जो उत्तर दिया, आपने जो अपनी असफलता मानी है भीड़ तो बढ़ रही है । क्यों बढ़ रही है ? क्योंकि दिल्ली में इलाज अच्छा होता है । गांवों में, कस्बों में वह सुविधा नहीं है । अब तो जिला सेन्टर्स में भी नहीं है, बिजली नहीं जिसकी वजह से आपरेशन नहीं हो सकता, आक्सीजन प्लान्ट नहीं है, दूसरी

मशीनें नहीं हैं। नतीजा यह होता है कि लोग भागते हैं दिल्ली के बड़े अस्पतालों की तरफ। तो भीड़ तो होगी ही और आपने स्वयं माना है आप असफल रहे हैं लोगों को जो चिकित्सा सुविधाएं मिलनी चाहियें वह उपलब्ध नहीं हो पायी हैं। यह आपकी असफलता हमारे देश के लिये बड़ी दुखदाई है और उसका नतीजा यह हो रहा है कि हर जगह, सबसे बड़ी समस्या हमारे सामने यह हो जाती है कि कोई दिन नहीं जाता जबकि देश के किसी न किसी कोने में, और कोई महीना, हफ्ता नहीं जाता दिल्ली में कोई न कोई हड़ताल न हो कभी डाक्टरों की, कभी जूनियर डाक्टरों की, कभी कम्पाउन्डरों की, कभी नर्सों की और कभी दूसरे अस्पताल के कर्मचारियों की हड़ताल न हो। हड़ताल मरीजों की नहीं हो पाती क्योंकि उनका सिलसिला बराबर बढ़ रहा है।

अव्यवस्था इतनी है कि खून की जरूरत, इमरजेंसी में मरीज है उसे खून चाहिये, खून आपके यहां मिलता नहीं। कह दिया जाता है लाओ अपने ग्रुप का तलाश करके। तीमारदार बेचारा 3-4 आदमियों को तलाश करके लाता है उसमे से अगर एक का भी खून मरीज के ग्रुप से नहीं मिला तो सबको वापस कर दिया जाता है यह कहकर कि ग्रुप नहीं मिला। आगे वह और लोगों को ग्रुप टेस्ट नहीं करते कहते हैं कि एक जांच पर 35 रु० खर्च होता है, इसी बिना पर दूसरे लोगों के खून की जांच नहीं होती है। और इसलिये मरीज को खून नहीं मिलता है। जो खून लिया जाता है, अगर 24 घटे तक उसका प्रयोग न हो तो उसे अलग से रिजर्व कोटे में रख दिया जाता है और कहा जाता है कि दूसरे आदमी को ढूंढ लाओ उसी तरह का जो कि पहले ग्रुप वाला हो। 24 घटे पहले जिसका खून लिया था उसी को ले आओ उसी का खून चाहिये, एमर्जेन्सी में हमें जरूरत है। रेडक्रास में खून मिल जाता है, लेकिन रेडक्रास वाले कहते हैं कि डाक्टर से लिखवा लाइये। अस्पताल का डाक्टर लिखता नहीं है इसलिये रेडक्रास से खून मिलता नहीं है। वहां बड़ी दिक्कत होती है। अगर डाक्टर लिखकर दे दे तो उसे खून मिलने में सहूलियत हो जाती है।

छुट्टी वाले दिन भी खून मिल जाया करे, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये। मौत छुट्टी का दिन नही देखती है इसलिये कोई न कोई ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये कि छुट्टी वाले दिन भी रेडक्रास से खून उपलब्ध हो सके। इसके साथ ही जितने लोग खून देने के लिये टेस्ट कराना चाहते हैं, यदि एक का खून नहीं मिले तो दूसरे तीसरे, चौथे, पांचवें का खून भी टेस्ट होना चाहिये। यह नहीं होना चाहिये कि एक का खून टेस्स कर लिया और वह अगर ग्रुप से नही मिला तो बाकियों को भी चले जाने के लिये कह दिया जाये, यह कोई अच्छी व्यवस्था नहीं है।

पता लगा है कि आपने नर्सेज को वायरलैस सैट्स दिये हैं कि डाक्टर की जब जरूरत हो उसके द्वारा बुला लें। मालूम नहीं कि वह सैट्स काम कर रहे है या नहीं, इस्तेमाल हो रहे हैं या नहीं, कितना उन पर खर्चा हुआ है और उनमें से कितने काम कर रहे हैं और कितने बेकार पड़े हैं ?

बहुत से आपरेशन इसलिये नहीं हो पाते कि दिल्ली के अस्पतालों में आक्सीजन नहीं मिल पाती है। कहा जाता है कि खत्म हो गई है। इसके साथ ही यह भी दुर्भाग्य है कि बिजली विभाग भी साथ नहीं देता है। समाचार-पत्रों में कई बार आया है, संसद में भी चर्चा हो चुकी है कि मरीज आपरेशन की टेबल पर लेटा है और लाइट चली गई और इसी कारण मरीज मर गया। यह बहुत सारी समस्याएं हैं।

डाक्टरों के कदाचार की बात को बहुत ही गंभीरता से लेनी चाहिये। अस्पतालों में गरीबों को दवा नहीं मि ा पाती, उनमें मिलावट होती है और बहुत सी जीवन रक्षक दवाओं के बहुत ज्यादा मूल्य लोगों से लिये जाते हैं और अगर वह मिल भी जाती हैं तो उसमें से बहुत सी मिलावटी होती हैं, जिनका प्रभाव उलटा होता है और मरीज मर जाते हैं। जीवन रक्षक दवाएं सस्ती दर पर मुहैय्या हों और अस्पतालों में ये मिल सकें, ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिये ताकि लोगों को दूर न जाना पड़े। एक आदमी दिल्ली के अस्पताल में जाता है, एमर्जेन्सी के मामले में उसे टैक्सी से जाकर दूर से दवा लानी पड़ती है। जितने की दवा नहीं होती है उससे ज्यादा 20, 30 रुपये उसके टैक्सी के भाड़े में लग जाते हैं। जीवन रक्षक दवाएं जल्दी उपलब्ध हो सकें, इसकी व्यवस्था बहुत जरूरी है।

रोगियों के साथ जो घर के लोग आते हैं, उन बेचारों को ठहरने की कोई व्यवस्था नहीं होती है, धर्मशालाओं में उन्हें जगह नहीं मिलती। देहात और कस्बों के लोग जो आते हैं उन्हें ठहरने के साथ-साथ खाना बनाने की भी बहुत दिक्कत होती है। वह होटलों में खाना खा नहीं सकते, क्योंकि बहुत मंहगा होता है। अस्पतालों में उन्हें सस्ती दर पर खाना मिल सके, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये।

इसके साथ ही जब तक आप स्वास्थ्य सेवाओं का केन्द्रीयकरण नहीं करेंगे, काम चलने वाला नहीं है। हरेक प्रदेश की अलग-अलग समस्याएं हैं और डाक्टर जिस ढंग से काम करते हैं वह सबको पता है। हमारे माननीय सदस्यों के साथ भी डाक्टर काम करते हैं। उनकी योग्यता की क्या बात कहें? हमारे माननीय सदस्य श्री जगपाल सिंह जी का एक्सीडेंट हो गया। एक सरदार और सरदानी का झगड़ा हो गया। सरदार कह रहे थे कि इधर जाना है, सरदारनी कह रही थीं कि इधर जाना है, बीच में जगपाल सिंह जी आ गये और इनके हाथ का फ्रैक्चर हो गया। ये अस्पताल में गये, पट्टी बंधवाई। अस्पताल में कहा गया कि आपकी हड्डी जोड़ दी गई है लेकिन वह गलत जोड़ दी गई। उनको दोबारा अपने क्षेत्र में जाकर हड्डी तुड़वाकर फिर जुड़वानी पड़ी। आपके अस्पताल में हड्डी कायदे से नहीं जोड़ी गई। एस. एस. वर्मा के लड़के के साथ क्या हुआ? मंत्री महोदय जांच कराएं कि पिछले तीन सालों में कितने लोगों की हड्डियां गलत जोड़ी गई और उन्हें दोबारा तोड़ना पड़ा। बहुत लापरवाही से काम होता है।

एलोपैथी की दवाओं पर से लोगों का विश्वास हटता जा रहा है। उनमें मिलावट बहुत ज्यादा है। यूनानी और आयुर्वेदिक दवाओं पर लोगों का विश्वास बढ़ रहा है। अधिक से अधिक दवाओं को उपलब्ध करने के साथ-साथ उनकी स्क्रीनिंग अच्छी तरह से करनी चाहिए ताकि उसमें मिलावट न हो।

मेरे क्षेत्र में बरेली जिले में जिला परिषद के 16 यूनानी और आयुर्वेदिक अस्पताल हैं। उनमें डाक्टर, नर्स, चौकीदार और चपरासी हैं। बिल्डिंग का किराया और स्टाफ की तनख्वाहें दी जाती हैं, फरनीचर है। लेकिन वहां पर 1974 से एक पैसे की भी दवा नहीं दी गई है। वे कहते हैं कि हम दवा के बिना कैसे इलाज करें। उनकी सेवाएं समाप्त नहीं हो सकतीं, क्योंकि वे पर्मानेंट हैं। उन्हें मुफ्त की तनख्वाह दी जाती है।

चूंकि देहात में अस्पताल नहीं हैं, इसलिए लोग बहुत दिन तक बीमारी का इलाज नहीं करा पाते। इससे रोग बढ़ जाता है। उनको दिल्ली के अलावा कहीं जगह नहीं मिलती है।

डाक्टर और डाक्टरनी गांवों में रहने के लिए तैयार नहीं हैं। इसलिये यह व्यवस्था करनी चाहिए कि ब्लीकल्ज में मोबाइल अस्पताल बनाए जाएं, जिसमें डाक्टर, नर्स, कम्पाउंडर और दवाओं की व्यवस्था हो और वे सप्ताह में एक बार गांव-गांव में जाएं। ऐसा करने से ही हम गांवों के लोगों को चिकित्सा सुविधा दे सकेंगे, वर्ना 100 साल तक भी उन्हें यह सुविधा नहीं मिल पाएगी।

हर गांव में स्वास्थ्य रक्षक नियुक्त किए गए हैं और उनको एनलजिन और क्लोरोक्विन की गोलियां दे दी गई हैं। उनसे भी बहुत लाभ होता है। पीछे बदायूं, शाहजहांपुर और बरेली में बाढ़ के समय बहुत लोग बीमार हो गए। राज्य के एक मंत्री ने कहा कि जब आबादी बढ़ेगी, तो वह किसी न किसी तरीके से घटेगी ही। लेकिन उस समय इन मामूली दवाओं से मरीजों को बहुत फायदा हुआ। इस व्यवस्था को और अच्छा बनाया जाए। उड़ीसा में जो अध्यापक और अध्यापिकाएं गांवों में पढ़ाती हैं, उनको डाक्टरी की ट्रेनिंग दी जाती है। अगर गांव में किसी महिला या बच्चे को कोई तकलीफ हो, तो वे लोग फोरन दवाएं मुहैय्या करते हैं। मैं जानना चाहता हूं कि सरकार कब तक गांव-गांव में यह व्यवस्था कर पाएगी। डाक्टरों को ऐसी प्रेरणा और रहने की अच्छी सुविधाएं दी जाएं कि पैसे से उनका मोह हटे। आज वे लोग मरीजों से अप्रत्यक्ष रूप से पैसा लेते हैं। सरकार इस भ्रष्टाचार को रोकने के लिए क्या व्यवस्था कर रही है?

डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल के इमर्जेन्सी वार्ड में बड़ी दुर्दशा है। एक मरीज का एक्सिडेंट हो गया है और दूसरे को बुखार से सरसाम हो गया है। उन दोनों की हालत अलग है, सिम्पटम्ज और इलाज भी अलग-अलग हैं। लेकिन उन दोनों को एक ही बेड पर लिटाया गया है। मंत्री महोदय जल्दी से जल्दी ऐसी व्यवस्था करें कि वहां पर एक बेड पर एक ही मरीज रखा जा सके। देश के करोड़ों-करोड़ जन के लिए कब तक इसकी सेवा उपलब्ध कर सकेंगे? जिससे कि उसे कभी दर्द हो, तकलीफ हो, परेशानी हो तो फौरन डाक्टरी सुविधा मिल सके? यह आप कब तक कर पाएंगे?

ऐम्बुलेंस आपकी कितनी चल रही हैं, कितनी खराब हैं, किस हालत में हैं शायद मंत्री जी को उसकी पूरी जानकारी भी नहीं है। ऐम्बुलेंस लोगों को उपलब्ध नहीं हो पाती है। वी० आई० पीज० को उपलब्ध हो जाय, ऐसा तो हो सकता है लेकिन आम जनता को ऐम्बुलेंस उपलब्ध नहीं होती है।

मैं जानना चाहता हूं कि क्या मंत्री महोदय कोई ऐसी ससदीय कमेटी बनाएंगे जो वहां जाकर इन सब बातों की जांच कर सके? वहां पर फैले हुए कदाचारों के सम्बन्ध में बहुत से अखबारों में जो घटनाएं छपती हैं और जो तथ्य उनमें दिए गए हैं यदि वह सही हैं तो बड़े शर्म की बात है। कब तक आप ऐसी व्यवस्था कर सकेंगे जिससे कि इनको रोका जा सके? हमको अच्छी चिकित्सा सुविधा और अच्छी स्वास्थ्य सेवा मिल सके इसकी कब तक आप व्यवस्था कर सकेंगे?

SHRI B. SHANKARANAND : Mr. Deputy Speaker, Sir, the Hon. Member referred to a visit to a mental hospital alongwith me. It is a fact that when we visited the mental hospital may be because we were there things were all right and the Hon. Member has formed his opinion...

MR. DEPUTY SPEAKER : His complaint is why was he not asked to remain whereas you were asked to remain there.

SHRI B. SHANKARANAND : They thought by his remaining there the things will get deteriorated. Whatever it is I do

say that things are not according to our expectations in these hospitals. There is lot of scope for improvement whether it be medical care services, diet, etc. But we cannot as a whole decry the medical services that are being provided to the poor people. I have given the figures. In Delhi hospitals thousands of poor people come and they are treated. The House will appreciate there has not been proportionate increase in the number of doctors and other staff as has been the increase in population. Thanks to the doctors and other employees of the hospitals they are serving the suffering people under difficult situation. I do not say they don't commit mistakes but one must appreciate under what conditions these people are working.

The Hon. Member referred to the Emergency Ward and one bed being shared by two patients. Sir, we must also appreciate that we do not deny admission to the patients simply on account of want of space. Poor people come to the hospital for emergency treatment. Can the hospital say there is no bed and you cannot be admitted. So, you must appreciate under what difficult situation medical care and immediate attendance is given to the suffering people. I do appreciate the concern of the Hon. Member. We have to increase the number of beds in the Emergency ward but then comes the question of paucity of funds. Now, we are constructing five hospitals on the periphery of Delhi so as to reduce the rush on the present hospitals and I do hope that things will improve after these five hospitals are completed.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री (सैदपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं लोकसभा के माननीय अध्यक्ष महोदय को बधाई देना चाहता हूं जिन्होंने ऐसे महत्वपूर्ण विषय पर यह ध्यानाकर्षण स्वीकार किया है। मैं माननीय मंत्री जी को भी बधाई देता हूं कि उन्होंने बड़ी ईमानदारी से यह स्टेटमेंट दिया है। इसमें कोई सन्देह नही है कि मंत्री जी के मन में पीड़ा है, मंत्री जी के मन में स्वास्थ्य के मामले में कुछ करने की इच्छा है लेकिन हमें खेद है कि मंत्री जी की यह पीड़ा और इच्छा उनके दिल में ही है, उनको बाहर की दुनिया का कुछ भी पता नहीं है। मुझे अफसोस हो रहा है कि जितनी ईमानदारी से उन्होंने उत्तर दिया है, उतना ही भुलावा देने वाला उत्तर बाद के उत्तरों में दिया है।

सबसे पहले तो मैं मंत्री जी से यह निवेदन कर दूं कि इस ध्यानाकर्षण में पांच प्वाइन्ट हैं — एक तो देश के विभिन्न अस्पताल, दूसरा विशेषकर डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल, तीसरे डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में डाक्टरों द्वारा किए जा रहे कदाचार, चौथे रोगियों के साथ अस्पताल में दुर्व्यवहार और पांचवें, इन सारी बातों के ऊपर सरकार ने क्या कार्यवाही की है। ये पांच मुद्दे हैं।

हमारे साथियों ने देश के विभिन्न अस्पतालों की यहां पर चर्चा की है। अस्पतालों में रोगियों के सम्बन्ध में चर्चा की है, दवाओं में हेरा-फेरी की चर्चा की है और इस तरह से बहुत सारी चर्चायें की हैं। मैं माननीय मंत्री जी को अखबार की कुछ फोटो दिखाना चाहता हूं। यह मैं आपको बाद में दे भी दूंगा। यह अखबार है इंडियन एक्सप्रेस, इसमें हैडिंग है :

'Born to die of Tetanus'

एक मां बैठी है और उसके साथ में दो-तीन मायें अलग बैठी हैं—यह मैटरनिटी वार्ड का चित्र है। एक ही बिस्तर पर तीन औरतें बच्चों को लेकर बैठी हुई हैं, एक का बच्चा गिर गया है और उसकी मृत्यु हो गई है और यह सुचेता कृपलानी अस्पताल की तस्वीर है, इसके डिटेल्स नहीं पढ़ूंगा क्योंकि टाइम नहीं है। यह दूसरा चित्र सफदरजंग अस्पताल का है जिसकी हैडिंग है :

'Odds against survival of new-born'

इसमें अस्पताल के गलियारे में बहुत बड़े कूड़े का ढ़ेर दिखाया गया है। इसी तरह से और

भी खबरें हैं, जैसे दिल्ली के डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल की खबर है :

'Fighting for life and blood'.

इसी सन्दर्भ में डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल का एक डाकूमेन्ट मेरे हाथ में है, लेकिन इसको मैं बाद में पढ़ूंगा। अभी मैं यह बता रहा था कि देश के अस्पतालों में क्या दुर्दशा है। हमारे बनारस में सर सुन्दरलाल अस्पताल और कबीर चौरा अस्पताल है जिनकी स्थिति बहुत ही गम्भीर है। श्री कमलापति त्रिपाठी जी यहां पर बैठे हुए हैं, उनके पास उनके सम्बन्ध में लाखों शिकायतें पहुंची होंगी। सर सुन्दरलाल अस्पताल तो नरक का अड्डा बना हुआ है। मैं स्वास्थ्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि केवल कहने की बात नहीं है बल्कि फील करने की बात है कि आज अस्पतालों में क्या दुर्दशा हो रही है। चाहे कलकत्ता हो, मद्रास हो, बेलगाम हो, दिल्ली हो या कोई भी स्थान हो वहां पर अस्पतालों की व्यवस्था ठीक नहीं है। मैं डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल की विशेष चर्चा करूंगा और जैसा मैंने आरम्भ में बताया है, इस काल अटेंशन के पाँच भाग हैं जिसमें एक भाग डाक्टरों के कदाचार से सम्बन्धित है। डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल के सम्बन्ध में मेरे पास एक लेटर है, इसके अनुसार वहां पर सूचना प्रसारित की गई थी :

> "The following medicine will be supplied from the O.P.D. Dispensary for general public only on the prescriptions of the clerks in the O.P.D. of this hospital from 1st April 1983."

इसमें 49 मैडिसिन के नाम दिए हैं और कहा गया है ये दवाइयां राम मनोहर लोहिया अस्पताल में रहेंगी। समय कम होने की वजह से मैं इसको पढ़ूंगा नहीं। राम मनोहर लोहिया अस्पताल का तीन करोड़ रुपए का बजट है। लेकिन मुझे ताज्जुब होता है कि कल शाम तक वहां पर सल्फाडाइजीन, टैट्रासाइक्लिन, विटामिन—बी काम्पलैक्स और विटामिन-सी और लगभग 13 दवाइयां वहां पर नहीं थीं। ताज्जुब है कि वहां पर ये दवाइयां न मिलें और आप कह रहे हैं कि आरोप निराधार है। मेरे मन में आ रहा था कि मैं मंत्री जी के खिलाफ प्रिवलेज मोशन का नोटिस लाऊं। यहां पर सब बातें रिकार्ड हो रही हैं। मैं जानना चाहता हूं कि ये दवायें कब से नहीं हैं, क्यों नहीं हैं और क्या इन दवाओं को खरीदने का बजट में प्रावधान है या नहीं है? अगर है, तो किस व्यक्ति की लापरवाही की वजह से ये दवायें नहीं थीं? इसका उत्तरदायित्व किस व्यक्ति के ऊपर है और उसके खिलाफ क्या कार्यवाही कर रहे हैं?

इस संदर्भ में मैं कहना चाहता हूं कि राम मनोहर लोहिया अस्पताल बहुत बढ़िया अस्पताल है। मैं समझता हूं कि ज्यादातर लोगों को मालूम नहीं है कि उस अस्पताल में लोगों को पॉप म्यूजिक भी सुनवाया जाता है। हृदय रोग विशेषज्ञ में पाप म्यूजिक सुनवाया जाता है। मंत्री जी कह देंगे कि इसलिए सुनवाया जाता है ताकि मैंटल संतुलन ठीक रहे। मैं कहना चाहता हूं कि इस अस्पताल में जली हुई औरतें आती हैं, एक्सीडेंट हुए लोग आते हैं, जो जिन्दगी और मौत का सामना करते हैं, बिस्तर पर तड़पते रहते हैं, आप उनको रामायण क्यों नहीं सुना सकते हैं, क्या गीता उनको नहीं सुनवा सकते हैं, क्या उनको गुरुवाणी नहीं सुनवा सकते हैं या कुरान की आयतें नहीं सुनवा सकते हैं? मैं पूछना चाहता हूं कि पाप म्यूजिक जरूरी है या गीता-रामायण जरूरी है? हृदय रोग के अन्दर पाप म्यूजिक की क्या जरूरत है? इस अस्पताल में चार करोड़ रुपए की लागत से एक विशेष कक्ष हृदय रोग की जांच के लिए बनाया गया है। इस कक्ष में आधुनिक

मशीनें और कारपेट लगे हुए हैं और दीवारों पर पेपरिंग की गई है, लेकिन इस विभाग के चारों डाक्टर योग्य नहीं है। एक भी डाक्टर योग्य नहीं है, जिसको हिन्दुस्तान की किसी एकादमी से सर्टिफिकेट मिला हो, या कोई डिप्लोमा मिला हो। वे साधारण एम बी. बी. एस. या एम. डी. हैं, लेकिन हृदय रोग की विशेषता हासिल नहीं है।

मान्यवर, एक बार मै और कश्यप जी वहां गये थे। हमको बहुत अच्छे ढंग से दिखाया गया और बहुत अच्छे-अच्छे डिमांस्ट्रेशन दिये गये। लेकिन, उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपको बतला दूं कि यहां के जो डाक्टर इन्चार्ज हैं, मैं उनका नाम नहीं जानता और नाम यहां पर लेना ठीक भी नहीं है, लेकिन मंत्री जी इसकी छानबीन करायें—उनके पास कोई डिग्री हृदय-रोग विशेषज्ञता की नहीं है। जब यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन में उनका चयन हो रहा था, उन्होंने वहां पर एक झूठी डिग्री पेश की और मैं चुनौती देता हूं—वह डिग्री इस हाउस में लाई जाय। माननीय मंत्री जी ने राही जी के प्रश्न के उत्तर में कहा है कि यह आरोप निराधार है यदि यह आरोप निराधार है तो कल से मैं इस लोकसभा में बैठने काबिल नहीं रहूंगा और न बैठूंगा—यह चुनौती देता हूं।

यहां एक महिला डाक्टर हैं उन्होंने तीन अन्य लोगों के साथ मिलकर एक शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया। हमारे पास एक बड़े जाने-माने अखबार 'ब्लिट्ज' की कटिंग है जिसे मैं मंत्रीजी को दे देता हूं ताकि वे इसकी छानबीन करायें। यह शोध-प्रबन्ध एक विदेशी डाक्टर के शोध-प्रबन्ध की नकल करके दे दिया गया और इससे हमारे मुल्क के लोगों की इतनी तोहीन हुई, यह बात तमाम अखबारों में छप गई, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। हमारे मंत्री जी को शायद इसका ज्ञान नहीं है। मैं यह नहीं कहता हूं कि उनको जानकारी है, लेकिन वे इसका पता लगायें। स्वास्थ्य विभाग के नियमों तथा अन्य इंस्टीचूशन्ज के नियमों के अनुसार यदि कोई ऐसा कदाचार करता है तो उसको नौकरी से मुअत्तिल कर दिया जाना चाहिये। लेकिन मुझे खेद के साथ इस सदन को अवगत कराना पड़ रहा है कि उस डाक्टर को हैड आफ दि डिपार्टमेन्ट बना दिया गया है और तब बनाया गया जब यह घटना प्रत्यक्ष में आई। इस महिला डाक्टर ने अब इन आरोपों को दूसरों पर मढने का प्रयास किया है, यदि आप जांच करेंगे तो सब बातें सामने आ जायेंगी। मैं अखबारों की कटिंग पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करता हूं, लेकिन यदि आप जांच करायेंगे तो सब तथ्य माननीय मंत्री जी के सामने आ जायेंगे।

हमारे मंत्री महोदय—माननीय शंकरानन्द जी—भोले-भाले शंकर जी हैं। हम काशी के रहने वाले हैं, हमारा और आपका बड़ा साथ है। हमारे काशी में 25 लाख जनता रहती है है—वह कहती है कि आप जरूर भोले शंकर हैं, आपका यह भोलापन देश को ठग रहा है, पार्लियामेन्ट को धोखा दे रहा है। इस डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल में सामानों की खरीद में इतना बड़ा घोटाला हुआ है जितना पिछले तीन वर्षों में देश के किसी भी अस्पताल में नहीं हुआ होगा। हृदय रोग कक्ष जिसका मैंने पहले जिक्र किया है—उस काम के लिये दो प्रकार की मशीनें आती हैं। एक—"ईको" नाम की मशीन है—विदेशों में जब इसका आविष्कार हुआ तो यह दो साइज की थी। एक की कीमत 25 लाख रुपये थी जो ब्लैक एण्ड व्हाइट टेलीविजन की तरह की है और दूसरी रंगीन टेलीविजन की तरह की है। वहां के हृदय रोग विशेषज्ञ ने 25 लाख रुपये वाली ब्लैक एण्ड व्हाइट मशीन मंगा ली।

फिर जैसा मैंने कहा, चार महीने के अन्दर, तीन महीने के बाद, यह कहा गया कि ब्लैक एण्ड व्हाइट बेकार मंगा लिया, हमें तो रंगीन चाहिए और उसके लिए तुरन्त आर्डर दे दिया और लगभग 45 लाख रुपये का रंगीन मंगा लिया। मंत्री जी को शायद इसकी जानकारी नहीं है क्योंकि ये तो भोले शंकर हैं लेकिन मुल्क का पैसा बरबाद किया गया। यह मशीन मंगाने की क्या जरूरत थी और हम ब्लैक एण्ड व्हाइट से ही काम चला लेते। ऐसी बात नहीं है कि इससे काम नहीं चल सकता था, क्योंकि हमने टेक्नीशियन्स से पूछा है कि इससे भी काम चल सकता है। इसके अलावा यह बात भी है कि अगर रंगीन ले लिया था, तो फिर ब्लैक एण्ड व्हाइट क्यों वापस नहीं किया गया। उसको वापस कर देते लेकिन ऐसा नहीं हुआ है। मैं यह बता रहा हूं कि इको मशीन में लाखों रुपयों का घपला हुआ है और हेराफेरी की गई है। श्री रामलाल राही ने बताया ही है कि 12 हजार रुपये का टूथ पेस्ट बाहर से मंगाया गया है। यह बिल्कुल सही बात है। केवल इस अस्पताल के अन्दर विदेशी टूथ पेस्ट 12 हजार रुपये का बाहर से मंगाया गया है। तो यह सब क्या हो रहा है और कैसे यह चलेगा। मैं मंत्री जी से कह रहा हूं और मेरा यह आरोप है कि वर्तमान जो मैडीकल सुपरिन्टेन्डेंट हैं, ये निहायत भ्रष्टाचारी हैं। मेरा इन पर आरोप है। ये मैडीकल सुपरिन्टेन्डेंट 1983 में हुए हैं और इसके पहले ये किसी कमेटी में कन्सलटेन्ट थे। मुझे पता नहीं, इसको क्या कहते हैं और मंत्री जी इसके बारे में अच्छी तरह से जानते होंगे। उसमें जो खरीद और बेच होती थी, वह इन्हीं की मर्जी से होती थी और उसमें बड़ा भ्रष्टाचार हुआ है। 5 करोड़ 80 लाख रुपये का सामान खरीदा गया है और उसमें से करीब 2 करोड़ रुपये की चोरी की गई है।

मेरे पास यह 'माया' मेगजीन है। इसमें जो तथ्य दिये हैं, वे मैं हाऊस के सामने रखना चाहता हूं। चोरी में एक आदमी का ही हाथ नहीं है बल्कि एक और व्यक्ति का हाथ है। वह व्यक्ति गुट-निरपेक्ष सम्मेलन का महासचिव था। यह 'माया' पत्रिका सितम्बर 1983 की है और इसमें यह लिखा है कि 30 सितम्बर, 1982 को उन्होंने एक पत्र लिखा, जिसका नम्बर है 292-गौकी० पी०सी० 182 और इसमें उन्होंने हवाला दिया था कि वे क्यूबा गये थे जहां छठा गुटनिरपेक्ष सम्मेलन हुआ था, तो उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ था कि क्यूबा सरकार ने विभिन्न राष्ट्रों के राष्ट्राध्यक्षों और उनके प्रतिनिधियों के लिए चिकित्सा की कितनी भव्य व्यवस्था की थी।

इसमें आगे लिखा है :

"हम किसी भी मायने में उनसे कम नहीं रह सकते···मेरा आग्रह है कि इस संबंध में आप कदम उठायें और उन विभिन्न होटलों में, जहां प्रतिनिधियों को ठहराने की व्यवस्था की गयी है, आपातकालीन चिकित्सा कक्ष खुलवायें और अत्याधुनिक चिकित्सा उपकरणों की भी व्यवस्था करायें।"

यह एक लेटर है। मैं माननीय मंत्री जी से पूछूंगा कि क्या आपकी निगाह में यह आया है या नहीं और क्या यह लेटर इस अखबार वाले ने गलत छापा है? अगर गलत छापा है, तो मैं आपके माध्यम से कहना चाहूंगा कि पार्लियामेंट के द्वारा इस अखबार वाले पर, इस पत्रिका पर कार्यवाही होनी चाहिए क्योंकि यह एक सेन्सेटिव मामला है और यह एक ऐसे व्यक्ति पर आरोप लगाता है जो कि हमारे डा० राम मनोहर लोहिया अस्पताल का मैडीकल सुपरिन्टेन्डेंट है और हमारी आदरणीय

प्रधान मंत्री का वह प्राइवेट चिकित्सक है। इससे हमारी प्रधान मंत्री जी की छवि भी धूमिल होगी, मुझे इस बात की चिन्ता है। मैं यह जानना चाहूंगा कि वह कौन-सा व्यक्ति है, जिसने ऐसा किया।···(**व्यवधान**)···गर्दन क्यों हिलाते हो। आपकी प्रधान मंत्री हैं, तो हमारी भी प्रधान मंत्री हैं।

*(Interruptions)***

MR. DEPUTY SPEAKER : He is not mentioning the name of anybody, I know how to allow, and what to allow. The Minister will reply to it, if necessary. Why do you get up ?

*(Interruptions)***

MR. DEPUTY SPEAKER : Nothing whatever of what he says is being recorded.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : ये जो लैटर आया है, इस लैटर के आधार पर 6 होटलों में अस्पताल खोले गए। मौर्या होटल, अशोका होटल, ओबेराय होटल, ताज होटल, कनिष्का होटल, सम्राट होटल, विज्ञान भवन और एयर पोर्ट पर अस्पताल खुलवाए गए। बहुत अच्छे उपकरणों के प्रबंध किए गए। इतना ही नहीं नान अलायंस के लिए जो संस्था थी, कमेटी जो इसको डील कर रही थी, उसने भी डेढ़ करोड़ रुपए इन सामानों को खरीदने के लिए डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल के फण्ड में दिया और यह सामान खरीदा गया। ताज्जुब है कि हमारे मंत्री जी को मंत्रालय ने लैटर लिखा, उसकी कापी भी मेरे पास है। उसमें लिखा गया है कि चार मार्च 1983 तक यह सामान हिन्दुस्तान में आ जाना चाहिए और जबकि मेरे पास इस बात का पक्का प्रमाण है कि 11 मार्च 1983 तक सामान आता रहा। सामान की फर्जी ढंग से एंट्री होती रही। यह सब इसलिए होता रहा क्योंकि करोड़ों रुपए का इसमें लाभ था। हमारे मंत्री जी भोले बनकर बैठे हुए थे।

MR. DEPUTY SPEAKER : If you feel that this is a very important issue, you should have asked for half an hour discussion; you need not utilize this time under calling attention.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : मैं आपके सुझाव से सहमत हूं। जैसा कि मैंने कहा कि इतने बड़े घपले में एक मामूली से नाम के पुराने मेडिकल सुपरिन्टेन्डेंट को मुअत्तल किया गया।

MR. DEPUTY SPEAKER : Do not mention the name.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : ठीक है, आप नाम को एक्सपंज करवा दीजिए। लेकिन जो सबसे बड़ा यहां बैठा था, उस पर आपने कोई कार्यवाही नहीं की। जो मेडीकल सुपरिन्टेन्डेंट यहां हैं उनके बारे में मैं मंत्री जी को बताना चाहता हूं। सन् 1964 में सफदरजंग अस्पताल में मद्रास की एक महिला का इलाज किया था। उस महिला के पति को निमोनिया हुआ था और उसका टी बी का इलाज किया गया और उसका पति मर गया। उस महिला ने मद्रास हाईकोर्ट में मुकद्दमा दाखिल किया। मेरे पास डाकूमेंट हैं। मद्रास हाईकोर्ट ने फैसला दिया इस डाक्टर के बारे में और 5000 रुपए का जुरमाना इस पर किया। फिर इसके बाद जज ने कहा था फैसले में कि इस आदमी की पदोन्नति रोक दी जाए, इसको मुअत्तल कर दिया जाए और यह पब्लिक सर्विस कमीशन को लिखा था। लेकिन बड़े खेद की बात है कि

**Not recorded.

आज वह आदमी मैडीकल सुपरिन्टेन्डेंट बन गया और रिटायर होने के बाद बना । मेरे पास मंत्री जी का और प्रधानमंत्री जी का स्टेटमेंट है जिसमें उन्होंने कहा है कि रिटायर होने के बाद किसी को पुन: सेवा में नहीं लिया जाएगा । मैं जानना चाहता हूं कि इस आदमी के इतना भ्रष्ट होते हुए, जिसके खिलाफ हाईकोर्ट ने निर्णय दिया हो, क्यों सेवा में लिया गया ।

इस आदमी में ऐसी कौन-सी खासियत या गुण आ गया जिससे इसको वहां पर मैडीकल सुपरिन्टेन्डेंट बनाया गया । इतना ही नहीं, सीनियोरिटी में उसका 116 नम्बर था जबकि 54, 55 और 88 नम्बर वालों को छोड़ दिया गया और इतने जूनियर आदमी को वहां पर रखा गया । जब आदमी रिटायर हो जाता है, तो उसकी कोई सीनियोरिटी नहीं रहती है । लेकिन यह आदमी कैसे मैडीकल सुपरिन्टेन्डेंट बन गया ? उपाध्यक्ष जी, बार-बार आप घन्टी बजा रहे हैं इसलिए मैं चाहूंगा कि जो प्रश्न मैंने पूछे हैं, उनका एक-एक करके उत्तर दिया जाए; जिससे रूल-222 के अन्तर्गत दूसरे ढंग से इस गंभीर मामले को न लाना पड़े । इन सारी बातों से मैंने स्पीकर साहब को भी लिखित में अवगत करा दिया है । इसलिए इस विषय पर कालिंग अटेंशन लिया गया था । मंत्री जी बहुत जिम्मेदारी की पोस्ट पर बैठे हुए हैं । देश की 70 करोड़ जनता के स्वास्थ्य की जिम्मेदारी इनके ऊपर है । कुछ ऐसा काम आप कीजिए जिससे इस देश के लोग अच्छे ढंग से सुखी जीवन व्यतीत कर सकें । आप कहते हैं कि आबादी बढ़ रही है । हम यह कहना चाहेंगे कि आप परिवार नियोजन भी तो करते जा रहे हैं । परिवार नियोजन विभाग में मैंने कुछ दिनों तक काम भी किया है । आबादी और परिवार नियोजन में अब बहुत ज्यादा अन्तर नहीं रह गया है । इन शब्दों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूं ।

SHRI B. SHANKARANAND : Mr. Deputy-Speaker, Sir, the Hon. Member has chosen this occasion specially to talk about certain things and certain doctors in Dr. Ram Manohar Lohia Hospital. But, having spoken the entire thing, whatever he wanted to say now, I think that there may not be an occasion for the same subject-matter to be discussed in a Half-an-hour discussion.

He has alleged that there are no qualified doctors in the wards there where heart patients are treated. It is not correct. In this very House, I have seen Hon. Members requesting me to find a room to get heart ailments treated. On the one hand, people want to be treated in that Hospital, and on the other hand the Hon. Member is saying that there are no qualified doctors there to treat heart ailments. He has said certain doctors there do not possess the qualifications. There is a certain procedure in appointing doctors in respect of certain disciplines. They are selected by the UPSC, they are selected only when they are found fit by the selection experts. And only on their selection, the decision is taken by the Government for appointment of such doctors. We do not appoint doctors in highly specialised fields on an *ad hoc* basis, unless they are so selected and found to be head and shoulders above. But the usual practice is appointments are made through UPSC. On the part of the Government, we go by the recommendations or selection done by the UPSC.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : यू.पी.एस.सी. में उस डाक्टर ने गलत सर्टिफिकेट पेश किया है ।

SHRI B. SHANKARANAND : Now he is telling something, that he has done something which was not correct, before the UPSC. How do I know what has been done before the UPSC ?

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : अब मैं आपकी नालेज में ला रहा हूं ।

SHRI B. SHANKARANAND : That is what I say. We go by the advice of the

UPSC, or the selection committee or the Departmental Promotion Committee ; that is how the doctors are appointed. The Government is not a party to any such malpractices, if at all there are any, but I think that there have been no malpractices in the appointment of any doctors in the Dr. Ram Manohar Lohia Hospital.

MR. DEPUTY SPEAKER : Yes. UPSC is competent.

SHRI B. SHANKARANAND : He has also referred to a case where some lady doctor did not have the experience of research according to the certificate that was produced by her.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : वह रिसर्च नकल करके की थी ।

SHRI B. SHANKARANAND : If there is any particular case, let the Hon. Member give to me and I will definitely look into that.

Regarding the equipment purchased by Dr. R.M. Hospital during NAM, the House and the country should he proud of the fact that we did make all arrangements that were necessary to rise to the occasion if there was any such demand for emergency treatment of any Head of State. If there was any mistake or any lapse on our part in making these arrangements, this very House would have condemned the Governmcnt itself. We have taken certain measures and we are proud of that. It is true that we did make arrangements in the hotels also where the Heads of States were staying. We took all precautions. We did not want to give any scope for criticism either in this country or abroad. I am proud and the House should feel proud of that. If there has been any malpractice in the purchase of of equipment, we shall certainly look into that.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : आपने मेडीकल सुपरिन्टेन्डेंट के बारे में कुछ स्पष्ट नहीं किया ।

SHRI B. SHANKARANAND : He has made certain allegations against the Medical Superintendent. He has referred to some case of 1964 when neither he nor I were here. I do not think that the House will believe that without any merit a person has come to the position. He has come to that position after putting in 20 years of service. I want to correct the Hon. Member's statement that the present Medical Superintendent became Medical Superintendent only after he was retired. That is not correct. He was Medical Superintendent before his services were extended, because we have found him to be fully competent to handle all matters, He is a very competent Doctor. That is the reason why he has been the personal physician of the Prime Minister. It is quite unfair on the part of the Hon. Member to criticise the efficiency of such a doctor who has been found fit for all purposes for which we give the highest reliance on his competence. He has been there as Medical Superientendent because he has been found competent both medically and otherwise also.

*(Interuptions)***

MR. DEPUTY SPEAKER : This is not going on record.

श्री राजनाथ सोनकर शास्त्री : आपने जो बयान दिया है, वह तथ्यों पर आधारित नहीं है । हमने उनके बारे में जितने आरोप लगाये हैं, हम अब भी उन पर दृढ़ हैं और मैं आपसे निवेदन करूंगा कि आप उनकी जांच करवायें क्योंकि यह मेडिकल सुपरिन्टेन्डेंट बिल्कुल गड़-बड़ आदमी है ।

श्रीमती कृष्णा साही (बेगूसराय) : उपाध्यक्ष जी, समस्त देश के लोग राजधानी के विभिन्न अस्पतालों में इलाज के लिए आते हैं । स्वतन्त्रता के बाद से जब हमारे यहां ज्ञान-विज्ञान का प्रचार और प्रसार हुआ है, उसी के साथ-साथ लोगों में आशाएं और आकांक्षाएं भी जग गई हैं । हमारे अस्पतालों में जब जिला स्तर पर या अनुमण्डल स्तर पर विशेषज्ञों या

**Not recorded.

साधनों की कमी होती है तो लोगों को कठिनाई का सामना करना पड़ता है क्योंकि सभी लोग चाहते हैं कि अस्पतालों में उनका सुन्दर से सुन्दर और अच्छे से अच्छा इलाज हो और इसीलिए लोग राजधानी में आते हैं। यह खुशी की बात है मंत्री जी ने कहा है कि दिल्ली के बाहर पांच अस्पतालों का निर्माण होने जा रहा है। लेकिन मैं एक बात कहना चाहती हूं कि हमारी जिन्दगी की जो न्यूनतम आवश्यकताएं हैं, उनके लिए इंसान प्रतीक्षा नहीं कर सकता। जब अस्पताल बनेंगे तो उनमें इलाज किया जाएगा, यह अच्छी बात है। मैं मानती हूं कि वर्तमान हालात से भी मंत्री जी भली भांति परिचित होंगे और जैसा उन्होंने अपने बयान में कहा है कि दिल्ली के अस्पतालों की व्यवस्था में सुधार लाने के लिए कोई कमेटी गठित की गई है परन्तु पहले भी कई कमेटियां गठित की जा चुकी हैं और उनके प्रतिवेदन मंत्रालय को भी प्राप्त हो चुके हैं। मैं नहीं जानती कि स्वास्थ्य विभाग उन प्रतिवेदनों पर क्या कार्यवाही कर रहा है, क्योंकि उनमें जोनल अस्पताल खोले जाने का भी विवरण दिया गया है। हमारे देश में जिस तरह से आबादी बढ़ती जा रही है, हमारी मांगें भी बढ़ती जा रही हैं, हमारी जरूरतें भी बढ़ती जा रही हैं, यह कोई आकस्मिक घटना नहीं। यह बरसों बरस में ही रही है। इसी को ध्यान में रखते हुए तो जोनल अस्पताल खोलने की बात अर्से से की जा रही थी। अगर कोमन एलमेंट के लिये अस्पताल होते तो यह स्थिति न होती और स्पेशलाइज्ड अस्पताल रैफरल अस्पताल हो जाते।

यहां के विभिन्न अस्पतालों में मरीजों की ओवरक्राउडिंग है और उसके अनुपात में डाक्टरों की कमी है। नर्स और पैरा-मेडिकल स्टाफ नहीं है और इमरजेंसी वार्ड के अलावा भी एक पलंग पर दो-दो मरीज सोते हैं। मेरे क्षेत्र से लोग आते हैं, आये दिन उनको अस्पताल में हम लोग भर्ती करवाते हैं और जब कभी उनको अस्पताल में देखने गये तो उनको जमीन पर या वरान्डे में सोए हुए देखा है। इसी तरह जो इन्वेस्टीगेशन होता है तो जिस दिन प्रारम्भ होता है और जब तक प्रैस्क्रिप्शन डाक्टर लिखते हैं उसमें काफी समय लग जाता है। मरीजों को 10-15 दिन बाद ऐक्सरे और इन्वेस्टीगेशन के लिये बुलाते हैं। इस तरह अगर दो महीने का समय ट्रीटमेंट की पर्ची लिखने में लगेगा तो बीमारी तब तक इंतजार नहीं करेगी। इसलिये आप कुछ ऐसा उपाय करें जिससे इन्वेस्टीगेशन से लेकर और जब तक डाक्टर फाइनल पर्ची इलाज की बनाये उसकी अवधि कम हो सके।

जो डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल राजधानी की नाक है और हमें गर्व है। वी.आई.पी. अस्पताल है, लेकिन मुझे दुख है कि उस अस्पताल में सभी बीमारियों के विशेषज्ञों का सर्वथा अभाव है, जैसे न्यूरोलाजिस्ट, किडनी स्पेशलिस्ट, गैस्ट्रो ऐंट्रोलाजिस्ट और यूरोलाजिस्ट विभागों के विशेषज्ञ नहीं हैं।

इसी तरह से कैट स्कैनिंग के लिए कितना हंगामा होता है। आल इंडिया इंस्टीट्यूट में 6-6 महीने लोगों को इन्तजार करना पड़ता है, सारे देश से लोग कैट स्कैनिंग कराने के लिये आते हैं। डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में भी कैट स्कैनिंग मशीन आयी थी एशियन गेम्स के समय, लेकिन तब से उसका इस्तेमाल नहीं हो रहा है। आखिर क्यों? जब सरकार ने इतना पैसा खर्च किया है फिर उसका इस्तेमाल क्यों नहीं किया जाता है?

प्राइवेट नर्सिंग होम्स में जहां कैट स्कैनिंग मशीन है वहां आम जनता अफोर्ड नहीं कर सकती है क्योंकि बहुत महंगा पड़ता है। इसी

तरह से अल्ट्रा साउन्ड मशीन का इस्तेमाल नहीं होता है । अगर उसका इस्तेमाल होता तो लोगों को लाभ होता । मेरी जानकारी है कि इसका भी विशेषज्ञ नहीं है और इसीलिये इसका इस्तेमाल नहीं हो रहा है । यह बड़ी-बड़ी मशीनें विशेषज्ञों के लिये हैं, छोटे-मोटे डाक्टर जी आयेंगे वह अगर इनका इस्तेमाल करेंगे तो वह आम मरीजों पर मिनी पिग्स की तरह इस्तेमाल करेंगे । आप देखें कि इन मशीनों का इस्तेमाल क्यों नहीं हो रहा है ।

आउटडोर में ई.एन.टी. और औरथोपैडिक्स विभागों के बारे में मेरा निजी अनुभव है कि वहां डाक्टर बैठते ही नहीं हैं । डाक्टरों की कमी है, 3, 4 दिन डाक्टर वहां बैठते ही नहीं हैं, मंत्री जी इस ओर विशेष ध्यान दें कि ऐसा क्यों है । मैं मानती हूं कि भीड़ हो गई है, आबादी बढ़ गई है, लेकिन डाक्टरों और विशेषज्ञों की क्यों कमी है । उस कमी को तो आप पूरा कर सकते हैं ।

लेकिन एक चिकित्सक दो-दो पदों पर यहां कार्यरत है, ऐसा क्यों होता है ? दो जगहों पर अगर एक डाक्टर कार्यभार संभालेगा तो वह अपने कर्तव्य के प्रति कैसे न्याय करेगा ? उनके पास कहां से समय आयेगा कि वह इस तरह दो-दो जगहों पर कार्य-भार संभाल सकें ?

मैं कहना चाहती हूं कि अभी एडीशनल डायरेक्टर जनरल आफ हैल्थ सर्विसेज के पद पर जो व्यक्ति हैं उसके साथ वह डायरेक्टर आफ सी.जी.एच.एस. भी हैं । इसी तरह एडीशनल डायरेक्टर जनरल हैल्थ सर्विसेज के साथ ही डिप्टी डायरेक्टर जनरल (आर.एच.एस.) भी हैं । डायरेक्टर इन दी मिनिस्ट्री आफ हैल्थ भी शायद दो पद संभाल रहे हैं । इस तरह से अगर एक डाक्टर दो-दो पदभार संभालते हैं तो उनके कर्तव्य में और कार्य-क्षमता में ह्रास होता है ।

इस समय सफदरजंग अस्पताल और डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल में बहुत से बड़े ऊंचे डाक्टरों के पद रिक्त हैं । सफदरजंग अस्पताल में पोस्ट आफ डायरेक्टर, सी.आई.ओ. 1983 से रिक्त है । इन रिक्त स्थानों को क्यों नहीं भरा जाता है ? अगर इन पदों को नहीं भरा जायेगा तो एक चिकित्सक या एक व्यक्ति दो-दो पदों पर काम करेंगे और उसमें प्रशासनिक त्रुटियां होंगी, अव्यवस्था होगी । इससे चिकित्सकों में घोर असंतोष होगा । जब उनकी प्रोन्नति का एवेन्यु समाप्त हो जायेगा तो उन की काम करने की उत्कंठा भी नहीं रहेगी ।

हमारे राजधानी के अस्पतालों की बात तो और है, लेकिन अगर हम अगर अपने प्रान्तों के हस्पतालों की बात कहेंगे तो उसमें बहुत समय चाहिये । आप भी कहेंगे कि यह राज्य का विषय है । बात सही भी है कि वह राज्य का विषय होगा लेकिन हमारी स्वास्थ्य के बारे में कोई राष्ट्रीय नीति होनी चाहिये जिससे प्रान्त और केन्द्र दोनों एक प्रकार की नीति अपना सकें ।

जनरल वार्ड में रहने वाले लोगों के प्रति यदि अवहेलना होगी, उनकी उपेक्षा होगी तो आम जनता में हमारे शासन के प्रति रोष होगा, आक्रोष होगा । इसलिये हमारी एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति होनी चाहिये ।

मैं अपने माननीय मंत्री जी से बड़े लिहाज और अदब से कहना चाहती हूं कि उन्हें तो अस्पतालों के सब डाक्टर पहचानते हैं इसलिये आपका राजधानी के अस्पतालों को अचानक देखना संभव नहीं है । जब आप गाड़ी से उतरेंगे तो सब आपको देखेंगे और आपके साथ लग

जायेंगे। लेकिन वास्तविकता यह है कि यहां आंकड़े देने से, सदन में आरोप और प्रत्यारोप करके हम इसका समाधान नहीं कर सकते। अगर विरोधी पक्ष के लोग कुछ कहते हैं तो वह आरोप की नियत से कहते हैं, अगर किसी की भर्त्सना करते हैं तो उससे समस्या का समाधान नहीं हो सकता है।

डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल के डाक्टर्स व सुपरिन्टेन्डेंट बहुत अच्छे हैं, बड़े कुशल हैं, हम लोगों को उन पर नाज है, लेकिन फिर भी जितना काम उनको दिया जा रहा है, उसके बोझ से बोझिल होकर वह काम करने की चेष्टा कर रहे हैं।

प्राइवेट नर्सिंग होम में बड़ी केअर होती है, बड़ी देखरेख होती है। हम वी.आई.पीज. हैं, लेकिन इससे कुछ काम नहीं होता है। सबसे पहले जनरल वार्ड के लोगों को देखना चाहिये।

अस्पतालों में मुफ्त दवाएं दी जाती हैं, लेकिन ऐसी बात नहीं है। विभिन्न अस्पतालों में दवाएं भी मुफ्त नहीं दी जाती हैं। कई डाक्टर्स प्रैस्क्रिप्शन देते हैं और कहते हैं कि बाहर से दवा ले आइये तब आपको लाभ होगा। अस्पतालों में घटिया किस्म की दवाएं दी जाती हैं। खुद डाक्टर कहते हैं कि प्रैस्क्रिप्शन आपको दे रहे हैं लेकिन खरीदकर दवा खाइये। यहां की दवा मत खाइये, दूसरी कंपनी की दवा लेकर खाइये। यह बात मैं सिर्फ डा. राम मनोहर लोहिया अस्पताल या सफदरजंग अस्पताल की नहीं कहती हूं बल्कि सारे अस्पतालों की कहती हैं जहां तरह-तरह की घटिया किस्म की दवाएं दी जाती हैं। दवाओं पर नाम भी नहीं होता, ड्रम में गोलियां भरी होती हैं। भगवान जाने क्या डाक्टर देते हैं और क्या खिलाया जाता है? इसकी ओर मैं मंत्री महोदय का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं।

बढ़ती आबादी के बोझ की बात कही जाती है। यह सही है कि आबादी बढ़ रही है, इसके लिये दीर्घकालीन योजना अपनी जगह है, इससे जनता की आवाज बन्द नहीं होगी। आपको कोई शार्ट-टर्म पालिसी अपनानी होगी जिससे अस्पतालों की सेवाओं में सुधार हो, प्रशासन में सुधार हो।

मरीजों के प्रति चिकित्सकों का जो व्यवहार होता है, उसका मै एक उदाहरण आपको देना चाहती हूं। कुष्ठ रोग के लिए इतनी बातें कही जाती हैं और इतना पैसा भारत सरकार देती है। मेरे यहां एक छोटा-सा लड़का रहता है, उसको कुष्ठ रोग का सन्देह हो गया। वह 3 महीने विलिंग्डन अस्पताल के चक्कर लगा रहा है।

मैंने कुछ दिन पहले मंत्री महोदय को कहा है कि इस तरह की बीमारियों को लेकर इतने लम्बे अरसे तक इलाज का प्रारम्भिक इनवेस्टीगेशन चलता रहता है, जब एम.पीज. के साथ ऐसी बातें होती हैं, तो आम जनता की स्थिति के बारे में क्या कहा जा सकता है?

मैंने कुछ मुख्य बातों की ओर मंत्री महोदय का ध्यान दिलाया है। वह कर्त्तव्यनिष्ठ हैं, वह काम करना चाहते हैं, लेकिन परिस्थितियां ऐसी हैं कि उनके सामने कठिनाइयां उपस्थित होती हैं।

14.01 hrs.

(SHRI SOMNATH CHATTERJEE *in the Chair.*)

SHRI B. SHANKARANAND : Mr. Chairman, Sir, the Hon. Member has made

certain allegations that sub-standard drugs and medicines are given to the patients and the very doctors who give these medicines, say so. May I request the Hon. Member, if she has come across any such drug, which is said to be sub-standard by any doctor, I think that would be the best case for me to go into detail and take necessary action against the persons responsible for this

Sir, Dr. R.M L. Hospital is known for treatment of the Members of Parliament and other VIPs and an instance of escaping notice of the VIPs, any lapse or mistake or supply of sub-standard drugs is difficult to find. That we must appreciate. Doctors and the employees who are working in the Dr. R.M.L. Hospital by and large are giving satisfactory service to the VIPs.

Sir, the Members, including our elder leader from the Opposition, Shri Mani Ram Bagri, really have shown concern about the paucity in the number of doctors and specialists in the hospital. This question needs to be gone into, but I would like to assure the Hon. Members that we shall take necessary action to provide satisfactory service to the Members. If there is any paucity in the number of doctors and specialists we will take care of it. But I may tell the Hon. Members that only increase in the number of doctors and specialists will not solve the problem. There should be some room, space or the necessary infrastructure to keep the equipment. Without all these things, mere increase in the number of specialists and doctors will not serve the purpose.

Sir, the Hon. Member has brought to the notice the fact that Catskan and other equipment which have been purchased at a very high cost have been lying unutilised or unused. I assure the Hon. Members that I will look into these matters and see that the equipment which have been purchased at a high cost do not lie unutilised or unused.

14.03 hrs.

MATTERS UNDER RULE 377

(i) Need for discussion on the policy of sugar pricing.

SHRI KRISHAN PRATAP SINGH (Maharajganj) : The Sugar industry owes to the sugar cane growers even now over 200 crores of rupees alone as price of their material leaving apart any interest for delayed payment etc. About sixty percent of the factories in the industry are unable to take up rehabilitation, modernisation or expansion. The industry is lamenting for the losses which they claim to have been accumulated to Rs 1,000 crores by now and the consumers are grudging the high price of sugar which is available to them at not less than Rs. 5.25 a kilogram in the fair price shops. There is certainly some mal-adjustment in the situation, unplanned working and wrong handling of the affairs.

It looks that the sugar policy is tilted particularly in matters of pricing etc. towards the bigger industries and the bigger units. The zonal prices of sugar based on averaging is doing harm to a larger number of sugar mills for the good of a few. Under this policy whereas the Government is managing sick or growing sick units by sinking crores of rupees, a few ones are taking undue advantage of the existence of such sick units. Through this special mention I request for a debate of this important issue of sugar pricing which is gradually rendering about 80 percent of the industry sick and twenty per cent flourishing.

(ii) Need to provide departmental transport to the postal department in Mirzapur district of Uttar Pradesh to enable prompt delivery of mail.

श्री राम प्यारे पणिका (राबर्ट्सगंज) : उत्तर प्रदेश के मीरजापुर जनपद में विशेषकर उसके औद्योगिक एवं आदिवासी क्षेत्रों में डाक एवं तार की व्यवस्था अत्यन्त असंतोषप्रद होने